प्राक्कथन

समकालीन कहानी के पूर्व पक्ष नयी कहानी आन्दोलन के रचनाकार ही विगत चालीस पचास वर्षों से रचना कार्य में सक्रिय रहे हैं। प्रायः हर नयी कहानी आन्दोलन अकहानी हो या समांतर कहानी आन्दोलन वामपंथी कहानी आन्दोलन हो या जनवादी आन्दोलन; वह अपनी पूर्व परम्परा की कहानी से पार्थक्य जतलाने के लिए संवेदना, अनुभूति, यथार्थगत विसंगति के विचार क्षण कौंध की अभिव्यक्ति हेतु नये बिम्ब व प्रतीक भी सहेजता रहा है।

देश-काल, युग-सापेक्ष सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक बदलाव भी कहानी के स्वरूप और अभिव्यक्ति पक्ष को कम प्रभावित नहीं करते हैं। वर्तमान दौर के स्त्री-विमर्श हो या दलित विमर्श,आम आदमी की बहस हो या जनवादी परिदृश्य स्त्री मुक्ति के सवाल हो या स्त्री-पुरूष परिवर्तित सम्बन्ध, इन सभी के सन्दर्भ समकालीन कहानी के विकास से जुड़े हैं। नयी कहानी, समांतर कहानी और जनवादी कहानी पर आलोचनात्मक पुस्तकें उपलब्ध हैं पर 'समकालीन कहानी के विकास और स्त्री-पुरूष संबंध पर प्रामाणिक और गंभीर पुस्तक का अभाव महसूस होता है। अतः विवेच्य कार्य इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

आज के बदलते सामाजिक सन्दर्भो में नारी के पराश्रित होने की भूमिका,शोषण, असमानता से मुक्ति के प्रयत्न एवं दोहरे मानदण्डों के बीच अपनी बदलती सामाजिक भूमिका के बावजूद स्त्री संघर्ष के प्रश्न वहीं खड़े

हैं । स्त्री-पुरूष के निजी एवं आंतरिक सम्बन्ध एवं व्यवस्था से जुड़े सवाल जटिलतर होते गये है। नारी की लड़ाई पुरूष से नहीं अपितु पितृसतात्मक व्यवस्था से है जो जन्म से मृत्यु तक स्त्री को पुरूष से हीन बताती है। स्त्री उनके भोग का साधन मात्र है।

वास्तव में समकालीन और समकालीनता से तत्पर्य अपने युग बोध, ऐतिहासिक बोध, तात्कालीन जीवन बोध और समसामयिक राजनैतिक-सांस्कृतिक बोथ से सम्पृक्त होना हैं। यह सच है कि एक ही काल खण्ड , समय और युगबोध में विभिन्न प्रवृत्तियों,विचारों और दार्शनिक भावबोध के रचनाकार सक्रिय रहते हैं। जो विभिन्न विधाओं में लिखते हैं। कोई रचनाकार आन्तरिक मनोवृत्तियों का सजग चितेरा होता हैं तो कोई कथाकार बाह्य परिवेश और युगबोध विशेष को महत्व देता हैं। निर्मल वर्मा, राजेन्द्र यादव, फणीश्वनाथ रेणु, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, जहाँ आन्तरिक अनुभूतियों के रचनाकार हैं तो उसी दौर के नये कहानीकारों में भीष्म साहनी, मोहन राकेश, मार्कण्डेय, और कमलेश्वर मध्यवर्गीय संवेदनाओं को प्रतिवद्ध भाव से रूपायित करते हैं।

समकालीन कहानी के विकास में विभिन्न कहानी आन्दोलनों , प्रवृत्तियों और रूझानों की चर्चा आवश्यक है। कारण विगत पचास वर्षो में स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में लोमहर्षक और युगान्तरकारी परिवर्तन आये हैं। अतः विभिन्न कहानी आन्दोलनों के अन्तर्गत उनकी चर्चा और विश्लेषण सम्वन्धी कार्य एक दुःसाहस भरा कार्य माना जायेगा।

वास्तव में समकालीनता केवल समसामयिक बोध से सम्पृक्त होना ही नहीं हैं बल्कि समकालीनता एक मूल्य दृष्टि है, विचार दृष्टि है, जिसमें या तो अपने देश-काल, इतिहास बोध से तटस्थता अपनाकर प्रेम अध्यात्म, प्रकृति सम्बन्धी सुंदरता के शाश्वत बोध की कल्पना की जाए। जो वस्तुतः समकालीनता के यथार्थ बोध एवं अन्तर्विरोधों से अलग होकर अज्ञेय, निर्मल वर्मा, धर्मवीर भारती व अन्य कलावादी चिंतकों का भाव वादी - अध्यात्मवादी भाव है। वास्तव में समकालीनता का सही तात्पर्य अपने समसामयिक इतिहास बोध , वैश्विक विजन और राजनैतिक संक्रमण में सामाजिक पारिवारिक मूल्यों से जुड़ाव और जन संघर्षो चेतना के प्रति प्रतिबद्धता का है। जिसका प्रतिबिम्ब हम मोहन राकेश (मलबे का मालिक), भीष्म साहनी (चिफ की दावत), राजेन्द्र यादव (छोटे-छोटे ताज महल), मन्नू भण्डारी (यही सच हैं) आदि रचनाकारों के पास साक्ष्य रूप में पाते हैं। कमलेश्वर, रेणु, और शानी ने अपनी प्रारम्भिक रचनाओं में ग्रामीण संवेदनाओं और रागात्मक बोध को अपनी रचनाओं में प्राथमिकता दी है।

यशपाल, नागार्जुन, मार्कण्डेय, और फणीश्वरनाथ रेणु, आदि ने नयी कहानी के प्रारम्भिक दौर में युगीन संदर्भो और वैचारिक परिवर्तन को महत्व दिया है यह उनकी अपनी राजनैतिक और सांस्कृतिक अवधारणाओं को महत्व दिया जाना है। कहा जा सकता है कि कहानी न केवल वैचारिक फ्लैश होती है , न केवल आत्मगत भाव की अभिव्यक्ति है और न केवल

किसी तटस्थ गवाह का हलफनामा है। क्योंकि 'कहानी अब किसी घटना का वर्णन मात्र नहीं हैं, उसकी संरचना की आन्तरिक प्रकृति केवल 'मनोरंजन' और ' कौतूहल' या 'तुष्टि' वादी प्रवृत्ति की ही नहीं है, और न 'जीवन की यथार्थताओं का संघर्ष' या 'जीवन के स्वाभाविक चित्रण' तक ही वह सीमित है। वह चित्रण ही नहीं करती है बल्कि एक नये कलासंसार की सर्जना भी करती है क्योंकि अन्य कलारूपों की तरह ही वह मनुष्य की जीवनसीसृक्षा का ही एक प्रकार है। (धननंजय वर्मा : हिन्दी कहानी का रचना शास्त्र, पृ.85)

विवेच्य शोध प्रबंध में समकालीन कहानी के विभिन्न आन्दोलनों, प्रवृत्तियों प्रमुख रचनाकारों और रचनाओं की चर्चा की गयी है। स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के बीच अभूतपूर्व बदलाव विगत पाँच दशकों में आये है उन्हे संयुक्त परिवार एकल परिवार तथा नारी जीवन की अस्मिता स्वतंत्रता में देखने का प्रयास किया गया है। वर्तमान दौर में औद्योगिक विकास तथा परिवर्तित जीवन शैली में अलगाव, ऊब, तनाव एवं परिवेश विडम्बनाएँ भी प्रमुख समस्याएँ बनकर उभरी हैं।'

प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय ' समकालीन कहानी : स्वरूप, क्षेत्र एवं युगीन संदर्भ' का विवेचन किया गया हैं। साथ ही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों-आंचलिक, ग्रामीण पहाड़ी एवं महानगरीय जीवन संघर्ष के रेखांकन में उनकी विशिष्टता दर्शायी गयी है। विभिन्न बदलते हुए सन्दर्भो में युगीन दबावों और सन्दर्भो को भी रेखांकित किया गया है।

'समकालीन कहानी का विकास : विभिन्न आन्दोलन एवं प्रवृत्तियाँ' नामक द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत नयी कहानी, आंचलिक कहानी और प्रगतिशील कहानी की चर्चा की गयी हैं। साथ ही विभिन्न कहानी आन्दोलन-अकहानी, समांतर कहानी, सहज कहानी, वामपंथी और जनवादी कहानी आन्दोलन और उनकी प्रमुख प्रवृत्तियों की विवेचना की गयी है। अक्सर हिन्दी कहानियों की आलोचना में ग्रामीण आंचलिक कहानियों और महानगरीय बोध की चर्चा की जाती है, जो विभिन्न कहानी आन्दोलन की सीमा में विश्लेषित नहीं होती है। संकेत यहाँ रेणु, मार्कण्डेय, शिवप्रसाद सिंह, कमलेश्वर ,शिवमूर्ति और मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों के बरक्स मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, कृष्ण बलदेव वैद्य, मन्नू भण्डारी और उषा प्रियंवदा आदि की रचनाओं के संदर्भो में हैं। बेशक ग्रामीण जीवन के रेखांकन हेतु मार्कण्डेय की ग्राम्य जीवन की कहानियाँ और कमलेश्वर की 'अपनी बस्ती' की कहानियाँ उनके उदाहरण में रखी जा सकती हैं। यहाँ लेखक की अपार संवेदनशीलता तथा बदलते हुए जीवन के भीतर असत पक्षों तथा ह्रासोन्मुख अंधशक्तियों के प्रति उनका कटु व्यंग्य तथा विद्रोह, इस प्रसंग के बड़े महत्वपूर्ण तत्व हैं।

मार्कण्डेय का 'भू-दान', 'दाना भूसा', 'आदर्श कुक्कुट गृह',- कमलेश्वर की 'नीली झील', 'बदनाम बस्ती', 'सलमा', 'राजा निरबंसिया',। फणीश्वनाथ रेणु की 'अच्छे आदमी' और 'तीसरी कसम', इस नये क्षेत्र की

उत्कृष्ट कहानियाँ हैं। यहाँ एक और महत्वपूर्ण तत्व है इन कहानियों में परम वैविद्य। कहीं भी, किसी भी स्तर से एकरसता और दुर्बोधता का नामोनिशान नहीं। ऋजु कौशल और सहजता ही इनकी शक्ति है तथा एक निश्चित अभिप्राय है संघर्षशील, बदलते हुए जीवन युद्धरत शक्तियों से डटकर जूझने और सीधे चुनौती देने का उद्देश्य ।

'समकालीन कहानी : प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएँ' नामक तृतीय अध्याय के अंतर्गत नयी कहानी बनाम समकालीन कहानी की चर्चा की गयी है। सुधी विद्वान जानते हैं कि समकालीन कहानी आन्दोलन के रचनाकार ही कालान्तर में समकालीन कहानी के पुरस्कर्ता माने गये हैं। हालाँकि दावा राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, शानी और मन्नू भण्डारी आदि को अधिक दिया गया है।' हमारा विचार है कि नई कहानियों के श्रेष्ठ उदाहरण में आने वाली ये कहानियाँ - कृष्णा सोबती की 'बादलों के घेरे', रांगेय राघव की 'गदल', अमरकांत की 'दोपहर का भोजन', मोहन राकेश की 'मिसपाल', 'आर्द्रा', मार्कण्डेय की 'उत्तराधिकारी', राजेन्द्र यादव की ' जहाँ लक्ष्मी कैद है', निर्मल वर्मा की 'परिन्दे' , कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया', धर्मवीर भारती की ' गुल की बन्नो' , मन्नू भण्डारी की ' यही सच है', फणीश्वनाथ रेणु की 'मारे गये गुलफाम', उषा प्रियंवदा की 'जिन्दगी और गुलाब', और 'वापसी',शेखर जोशी की ' कोसी का घटवार' आदि जहाँ एक ओर वैचारिक स्तर पर नई हैं, वहाँ दूसरी ओर शिल्प के स्तर पर भी नयी परम्परा के रेखांकन में सक्षम हैं। अतः नयी कहानी और आंचलिक कहानी आन्दोलन की सम्यक चर्चा विभिन्न रचनाओं के संदर्भ में की गयी है।

'अकहानी आन्दोलन' व्यवस्था के प्रति विक्षोभ ,गुस्सा और प्रतिकार व्यक्त करता है। कहानी आन्दोलन में स्त्री-पुरूष प्रसंगो का बैलोस चित्रण किया गया है। महेन्द्र भल्ला, रमेश बक्षी, इब्राहिम शरीफ, गंगाप्रसाद विमल, निरूपमा सेवती आदि ने दिल्ली बम्बई और कलकत्ता के संघर्षपूर्ण जीवन में नारी की स्थिति को विभिन्न कथा-प्रसंगों से दर्शाया है। सुधा अरोड़ा, गंगाप्रसाद विमल, दूधनाथ सिंह, निरूपमा सेवती ,दीप्ति खण्डेलवाल और रवीन्द्र कालिया आदि ने समांतर कहानी आन्दोलन में अपनी सृजनात्मक भूमिका निभायी है। जिसमें 'एक औरत की कथा', 'हव्वा', 'सागर के तट पर', और 'काला रजिस्टर' कहानियों का एक विशेष महत्व है।

समकालीन कहानियों के क्षेत्र में वामपंथी चेतना के सतीश जमाली, वेणुगोपाल, सृंजय, ज्ञानरंजन, काशीनाथ सिंह आदि अपना हस्तक्षेप जारी रखते हैं तो जनवादी कहानी आन्दोलन में शिवमूर्ति, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, रमेश उपाध्याय, नासिरा शर्मा, और नमिता सिंह की कहानियों का अपना विशिष्ट महत्व है।

'स्त्री-पुरूष सम्बन्ध : परिवर्तित समाज और विश्लेषण' नामक चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत संयुक्त परिवार बनाम एकल परिवार : शहरी और ग्रामीण जीवन को विश्लेषण सम्बन्धी आधार बनाया गया है। उषा प्रियंवदा

की 'वापसी' कहानी संयुक्त परिवार की गाथा है तो मोहन राकेश की 'सुहागिनें' कहानी पति-पत्नी सम्बन्धों में आयी रिक्तता और व्यर्थताबोध को दर्शाती है। प्रसंगवश कृष्णा अग्निहोत्री की 'आक्टोपस' कहानी नारी जीवन के संघर्ष की व्यथा कथा है। विवाहपूर्व और विवाहेत्तर सम्बन्धों के रेखांकन में राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मोहन राकेश, से लेकर मैत्रेयी पुष्पा ,नासिरा शर्मा, मृदुला गर्ग, ने कई अभिनव प्रसंग रचे हैं।

राजेन्द्र यादव की कहानियों में स्त्री-पुरूष सम्बन्धों वाली कहानियों की संख्या काफी बड़ी है। इनमें प्रेम की अशरीरी धारणा के तीखे प्रतिसाद से लेकर संबंधों के टूटने की पीड़ा तक की कहानियाँ शामिल हैं। तन और मन के दो अलग खानों में ,जैनेन्द्र की नायिकाओं की तरह बाँटकर स्त्री को देखने का 'नयी कहानी आन्दोलन' ने विरोध किया है। राजेन्द्र यादव भी इस छद्म को स्वीकार नहीं करते। 'मेरा तन तुम्हारा है', 'एक कमजोर लड़की की कहानी', की नायिकाओं के मुकाबले 'नीरंजना' की नीरंजना अपनी अर्जित आत्मसजगता के कारण ही अपने प्रेमी के प्रति अधिक ईमानदार है। 'पुराने नाले पर नया फ्लैट' में यह नाला दीरू के पति के पूर्व प्रेम का है और नया फ्लैट उनके दाम्पत्य सम्बन्धों को दर्शाता है जो कालोनी में नये मकान की तरह ही हवा के हर झोंके के साथ बदबू का भभका भी साथ लिये है।

नारी जीवन की अस्मिता और स्वतंत्रता संदर्भ में मोहन राकेश की कुछ अन्य कहानियाँ 'आखिरी सामान', 'मिसपाल', 'भूखे' और 'सुहागिनें' आदि स्त्री को पूरे सामाजिक संदर्भ में प्रस्तुत करती हैं। 'आखिरी सामान', की बेला भण्डारी मूल्यविहीन, भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था में उसके मुख प्रतिशोध का प्रतीक बन जाती है। मूल्यों के इस व्यापक ह्रास की स्थिति में 'मिसपाल' की तिक्तता और हताशा उसके लिए अनिवार्य सामाजिक परिप्रेक्ष्य तैयार करती है। उसकी सबसे बड़ी आकांक्षा यही है कि दफ्तर के इस गलीज माहौल से निकलकर ,किसी साफ-सुथरे निर्जन स्थान पर बैठकर, अपने मन के दो चार चित्र बना सके । इस माहौल की सारी कटुता को पी और पचाकर भी उसकी आधारभूत सौंदर्य वृत्ति कुंठित होने से बची रह सकी हैं। इस तरह 'भूखे' में वास्तविक भूखे एवलीन और उसका बच्चा नहीं है। अपने भारतीय पति की असामयिक मृत्यु के बाद एवलीन अपनी और अपने बच्चे की जरूरते क्रमशः कम करती जाती है। कलाकार पति की तस्वीरे बिक जाने की आशा में वह स्वयं अपने को और बच्चे को बहलाती रहती हैं। इसके चारों ओर जो लोग हैं - सड़क पर, होटलों में और सब कही - वे ही दरअसल भूखे लोग हैं जो उसकी मजबूरी की बिना पर उसे ही अपनी खुराक बना लेना चाहते हैं, और वह भरसक गरिमामय ढंग से इस सबका प्रतिरोध करती है।

'अलगाव, तनाव और विडम्बना सम्बन्धी विमर्श' नामक पंचम अध्याय में समसामयिक जीवन की त्रासदी को रेखांकित किया गया है। निःसंदेह अज्ञेय की 'रोज' कहानी राजेन्द्र यादव 'जहाँ लक्ष्मी कैद है' और शिवमूर्ति की

'कसाईबाड़ा', सुधा अरोडा की 'महानगर की मैथिली', नासिरा शर्मा की 'संगसार' आदि कहानियाँ हमारे आसपास के अलगाव, तनाव और विडम्बना वाले संसार का ही प्रतिबिम्बित ताना-बाना हैं।

विसंगति बोध और नारी जीवन की त्रासद स्थिति को जहाँ कमलेश्वर 'माँस का दरिया' और राजा निरबंसिया' में उकेरते हैं वहीं दीप्ति खण्डेलवाल 'हव्वा' कहानी में स्त्री-पुरूष के बीच आये रिक्तता बोध व्यावसायिक दृष्टिकोण तथा यौन मुक्ति को दर्शाती है। कहा जा सकता है कि राजा निरबंसिया का उल्लेख उसके प्रकाशन से लेकर आज तक उसके दोहरे कथा-शिल्प के कारण होता रहा है। लेकिन फिर भी कहानी में लोक-कथात्मक शैली का समानान्तर उपयोग दो भिन्न युगों की संवेदना को , उसमें घटित परिवर्तन को ,पर्याप्त सर्जनात्मक ढंग से उभारता है। बीमारी से उपजी जगपती की आर्थिक मजबूरियाँ उसे धीरे-धीरे उसकी पत्नी चंदा से दूर करती जाती हैं। वस्तुतः यह तथ्य ही कहानी में परिवर्तन, संवेदना और मूल्य-बोध का वाहक बन जाता हैं। लेकिन आत्महत्या से पूर्व चंदा और कानून के नाम छोड़ा गया उसका संदेश अपनी रोमानी प्रकृति के कारण कहानी में निहित क्षीण से विचार को भी आहत करता है।

नई कहानी में आधुनिक नारी की उपस्थिति के संदर्भ में कमलेश्वर की टिप्पणी है -आधुनिक नारी अब अपनी पूरी गरिमा, देह-संपदा और वास्तविक सम्मान के साथ आई है इसी संदर्भ में थोड़ा आगे चलकर लिखते हैं - औरतें अब औरतें हैं ,वे झूठी सती या वेश्याएँ नहीं हैं, इसलिए नई कहानी खलनायिकाओं से शून्य है.....संशयग्रस्त सम्बन्धों के बिजबिजाते दलदल अब नहीं हैं। नारी की देह अब उसके अपने निर्णय की वस्तु है कमलेश्वर द्वारा रचित कहानियाँ 'एक अश्लील कहानी', 'एक थी विमला', प्रेमिका', 'रातें', 'माँस का दरिया' आदि कहानियों में स्त्री या तो सामाजिक विसंगतियों की शिकार है या फिर एक संत्रास भरा जीवन जीने को विवश है।

समकालीन कहानी का विकास : अद्यतन संदर्भ' नामक षष्ठ अध्याय के अंतर्गत परम्परा और आधुनिकता बोध की चर्चा की गयी है। जिसके परिप्रेक्ष्य में राजेन्द्र यादव की कहानी 'अभिमन्यु की हत्या', धर्मवीर भारती की 'गुलकी बन्नो' से लेकर मैत्रेयी पुष्पा की 'ललमनियाँ' भी शामिल है। स्त्री-पुरूष के बदलते आयाम में निर्मल वर्मा की 'परिन्दे', मोहन राकेश की 'सुहागिनें', से लेकर निरूपमा सेवती की 'दहकन से परे' कहानी तक की चर्चा अवश्यम्भावी है। हाल ही कमलकुमार और चित्रा मुदगल ने देह मुक्ति और नयी नैतिकता के संदर्भ में यौन विमुक्ति और भारतीय परिवेशएवं परम्परा पर आधारित विलक्षण कहानियाँ लिखी हैं।

'भाषा-शैली एवं शिल्प विधान' नामक सप्तम अध्याय में पचास वर्षो के विभिन्न कहानी आन्दोलनों और प्रवृत्तियों की विशिष्ट रचनाओं तथा रचनाकारों की शैली सम्बन्धी विशिष्टता पर भी सांकेतिक चित्रण रचा गया है।

पूर्ववर्ती कहानियों की सांकेतिकता से नई कहानी की सांकेतिकता को अलग करते हुए मोहन राकेश लिखते है - 'बात वही होती है और जीवन के उसी कैनवास से उठाई जाती है। मगर उसके सम्बन्ध में लेखक के अनुभव की निजता, जीवन के यथार्थ की व्यापक पकड़ और भाषा तथा शिल्प के क्षेत्र में उसकी अपनी प्रयोगात्मकता उसकी रचना को भिन्नता और एक और ही सार्थकता प्रदान कर देती है।' (नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति पृ.92) इस सांकेतिकता के लिए मोहन राकेश ने ही नई कहानी से 'चिफ की दावत' और 'दोपहर का भोजन' का उल्लेख किया और टिप्पणी की है , 'चिफ की दावत' का संकेत माँ के चरित्र के माध्यम से उभरता है और 'दोपहर का भोजन' में अभावग्रस्त घर की एक साधारण सी दोपहर के वर्णन मात्र से। कहना न होगा कि रचनाकार अपनी अभिव्यक्ति के लिए अपनी विशिष्ट शैली के साँचे निर्मित कर लेता है। धनंजय वर्मा ने भी हिन्दी कहानी के रचना शास्त्र संदर्भ में कहा है कि - 'कहानी विधा के रूपात्मक साँचे निर्मित हुए और एक लम्बे अरसे तक कहानी की पहचान और परख इन्ही साँचो से होती रही। 'कहानी की आलोचना और मूल्यांकन में इन्हे एक रीति और कालान्तर में रूढ़ी का स्वरूप मिल गया । कथानक, चरित्र-चित्रण, देश-काल- वातावरण, शैली और उद्देश्य के पाँच तत्वों पर कहानियों की परख जारी रही। कथानक और चरित्र(पात्र) के अतिरिक्त संकलन त्रय (स्थान, कार्य और समय की एकता) की अवधारणाएँ भी नाट्य विवेचन से ज्यों-की-त्यों उठा ली गयी और संवाद को भी कहानी के तत्व के रूप में मान्यता मिली। इस सबका परिणाम यह हुआ कि कहानी की आलोचना और मूल्यांकन के अपने स्वतंत्र प्रतिमान विकसित नहीं हो पाए हैं।

राजेन्द्र यादव जहाँ मध्यवर्ग की भाषा शैली को बर्हिमुखी पात्रों के रूप में चित्रित करते हैं वहाँ मोहन राकेश मन के संवेदनशील पक्षों को निम्नमध्य वर्गीय पात्रों के परिवेश में। कमलेश्वर की बहुमुखी प्रतिभा कस्बे-ग्राम ,महानगर और आन्तरिक भावों के पात्रों को संपन्न करती हैं। सच है कि शहरी जीवन की अपेक्षा ग्रामीण अंचल और कसबाई जीवन शैली का चित्रण रचनाकार और पाठक आलोचक के लिए एक चुनौती हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश ,राजस्थान, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और आन्ध्र में प्रचलित लोक शैलियों की छाप भी अनेकानेक रचनाओं में उपलब्ध हैं। जिसके लिए एक पृथक शोध प्रबंध की आवश्यकता होगी। प्रसंगवश कहना होगा कि फणीश्वनाथ रेणु के 'ठुमरी' कहानी संग्रह में संकलित अनेक कहानियों में कला और कलाकार की गिरावट के प्रति जो पीड़ा अभिव्यक्त हुई हैं। वह इस संकलन की एक कहानी 'भित्तिचित्र की मयूरी' में उभरती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। इसी प्रकार 'आदिम रात्रि की महक' में संकलित अनेक कहानियों में सामाजिक तथा पारिवारिक जीवन के अन्तर्वर्ती रसगंधों का जो मुग्ध चित्रण हुआ है तथा जिनमें लोक जीवन की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और लोका चेतना का फैलाव दृष्टिगोचर होता है।

महानगरीय जीवन और पहाड़ी-परिवेश को चित्रित करती हुई निर्मल वर्मा की गद्य भाषा काव्याभिव्यक्ति के नये साँचे निर्मित करती हैं तो मैत्रेयी पुष्पा के पास बुन्देलखण्ड़ की भाषा शैली हैं। सारांशतः नयी कहानी के शिल्प सौंदर्य में उसके कथ्य के अनुरूप जैसे कहानी का सारा शिल्प ही उदार से उदारतम हो गया। उसका बँधा-बँधाया शास्त्रीय रूप अपने आप ही उदार और महिम हो गया। कथा, लोकतत्व, संस्मरण, यात्रा-वर्णन की शैली, डायरी की कला, फ्लैशबैक पद्धति ये सबके सब तत्व मिल-जुलकर एक ही कहानी में उजागर महाज हो गया। यह सर्वथा एक नया शिल्प ही बन गया। वर्तमान दौर तक जैसे भारत का समग्र जीवन ही कहानी शिल्प में कहानी की अन्तरात्मा में जैसे रूपायित हो गया हैं। शिल्प उसकी आत्मा में डुबकर एक हो गया और इस तरह कहानी कला बड़ी नाजुक और मर्मस्पर्शिनी बन गयी हैं। दूसरी ओर वह कहानी की ऊर्जा शक्ति का वाहन हो उठी हैं। इस सहज प्रक्रिया में शिल्प की अपनी बारीकी- कहानी के स्वभाव और शक्ति के साथ एकाकार होकर अपने सही रूप में संवेदित हो उठी। इसके लिए उसे भाग्यवश पाठकों का प्रबुद्ध वर्ग विरासत रूप में ही मिला जो कहानी की प्रकाशित संवेदना तथा बारीकियों की व्याख्या और सराहना कर सके। विवेच्य शोध प्रबंध अपनी सीमाओं के समकालीन कहानी के विभिन्न आन्दोलनों प्रवृत्तियों और विशिष्ट मनोवृतियों की रचनाओं का विश्लेषण भर है। विषय की व्यापकता, गंभीरता और गहनता सुधी विद्वानों के सामने स्पष्ट हैं।

शोध प्रबंध में विवेचन की अपनी सीमा है और समकालीन कहानी के वर्तमान परिदृश्य में ग्राम जीवन, कस्बाई जीवन, विदेशी परिवेश तथा महानगरीय जीवन के जीवन के कई नये पुराने स्त्री-पुरूष रचनाकार सक्रिय है। अतः गत्यात्मक दौर में कथ्य,विषय वस्तु, भाषा-शैली और शिल्प के नये क्षितिज और सिमान्त भी कालान्तर में मुखर हो सकते हैं।

शोधकार्य की पूर्व इच्छा को प्रेरणा गुरूवर प्रो.बी.के.शर्मा 'रोहिताश्व' से प्राप्त हुयी है। वैसे विभिन्न कहानी आन्दोलन पर पुस्तकें अलग-अलग आलोचकों व रचनाकारों की उपलब्ध रही है। पर विगत पचास वर्षो में 'समकालीन कहानी का विकास : स्त्री-पुरूष संबंध का गम्भीर गवेषणात्मक और आलोचनात्मक कार्य अनुपलब्ध रहा है। विवेच्य कार्य में राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मोहन राकेश, सुरेन्द्र चौधरी धनंजय वर्मा, रमेश उपाध्याय, मैत्रेयी पुष्पा और सुधा अरोडा आदि के विचार ग्रंथों से सहायता ली गयी है साथ ही विजयमोहन सिंह, नामवर सिंह आदि की पुस्तकों से भाषा-शैली और शिल्प सन्दर्भ के आधार तथ्य ग्रहण किये गये हैं।

विभिन्न रचनाकारों और आलोचकों के लेखन का आभार मानते हुए शोध प्रबन्ध की प्रस्तुति के समय अपने जीवनदाता पिता श्री इन्द्रपाल सिंह भदौरिया, माता श्रीमती शैल कुमारी और अग्रजा आनन्द के प्रेरक शब्दों को याद कर रही हूँ। अनुज रणजीत सिंह और अनुजा निधि,शालिनी तथा ऋचा बार-बार इस गुरूत्तर कार्य को पूर्ण करने की चेतावनी देती रही है।

परम पूज्यनीय पितातुल्य ससुर श्री सत्येन्द्र सिंह गौर के संरक्षण तथा मेरे अतीत और भविष्य के सेतु प्रिय देवेश सिंह ने अनथक भाव से इस शोधकार्य में संदर्शक और सहयोगी की भूमिका निभायी है। उनके प्रति मौन मुखर आभार कार्य स्थल केन्द्रीय विद्यालय -1 के प्राचार्य वेलयुधन के.पी और केन्द्रीय विद्यालय- 2 वास्को के प्राचार्य डा.विजयप्रकाश मिश्र ने सतत साहस प्रदान किया है। इस समय हमारे पारिवारिक मित्र कविवर लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' के प्रेरणास्पद शब्दों को विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

हिन्दी विभाग के वरिष्ठ सदस्यों प्रो. रवीन्द्रनाथ मिश्र, डा.इशरत खान, डा.वृशाली मान्द्रेकर और स्नेहमयी डा.चन्द्रलेखा डिसूजा ने समय-समय पर मेरी हिम्मत अफजाई की है। कार्यकर्ता यशवंत नाईक, संजना और दिलीप आगापुरकर ने प्रशासनिक कार्य में भरसक मदद की है। जाने-अनजाने में कतिपय नाम और प्रेरणास्पद व्यक्ति छूट सकते हैं। पर उन अनाम साथियों का आभार आवश्यक है जो विद्या के संस्थान गोमंतक, राष्ट्रभाषा मडगाँव, एम.पी.टी. सडा, आचार्य नरेन्द्रदेव पुस्तकालय-लखनऊ, अमीरूद्दौला पुस्तकालय केसरबाग- लखनऊ, स्टेट सेण्ट्रल लायब्रेरी - हैदराबाद, लखनऊ विश्वविद्यालय -लखनऊ तथा गोवा विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों से आवश्यकतानुसार शोध-संदर्भ और रचना-साक्ष्य उपलब्ध कराते रहे हैं। टंकन कार्य के द्वारा श्री अजय जोशी के अतिशय सहयोग के लिए मैं सदैव आभारी रहूँगी। जिन्होने इस कार्य को पूर्ण रूप प्रदान करने में सहयोग दिया।

समय इतिहास और परिवर्तन के साक्षी रचनाकारों और स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के परिवर्तित सम्बन्धों के अनुसन्धाताओं व आलोचकों के सामने मेरा यह शोध कार्य, लेखन, शोध और समीक्षा की दुनिया में एक विनम्र प्रयास है।

निवेदिका

स्नेह

दिनांक : 27 नवम्बर 2010
स्थान : तालेगाँव-गोवा विश्वविद्यालय

स्नेह भदौरिया
(पीएच. डी. शोध छात्रा)